फ़िलिपा पियर्स

स्वाफ़हम का फेरीवाला

स्वाफ़हम का फेरीवाला

पुनर्कथन

फ़िलिपा पियर्स

अनुवाद

मोहिनी राव

चित्रांकन

रोज़ामंड फ़ाउलर

स्कॉलास्टिक

न्यूयार्क टोरंटो लंदन ऑकलैण्ड सिडनी

मेक्सिको सिटी नई दिल्ली हांगकांग ब्यूनस आयर्स

मूल © फ़िलिपा पियर्स, 2001
चित्र © रोज़ामंड फ़ाउलर, 2001
हिंदी अनुवाद © स्कॉलास्टिक इंडिया प्रा. लिमिटेड
पहला हिंदी संस्करणः सितम्बर 2002

स्कॉलास्टिक इंडिया प्रा. लिमिटेड
29 उद्योग विहार, फेज़-I, गुड़गाँव-122016
द्वारा प्रकाशित।

स्कॉलास्टिक इंडिया भारत में स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्था है।
भारत के अतिरिक्त कॅनडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम, मेक्सिको,
हांगकांग और अर्जेंटीना में भी स्कॉलास्टिक कार्पोरेशन की उप-संस्थाएँ हैं।

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी
अंश का किसी भी रूप से, पुनर्मुद्रण नहीं किया जा सकता।
अनुमति के लिए प्रकाशक को लिखें।

ISBN: 81-7655-140-6

मूल्यः 50 रुपये

बहुत, बहुत समय पहले नॉरफ़ोक के छोटे-से नगर स्वाफ़हम में जैक नाम का एक युवक अपनी विधवा माँ के साथ रहता था। शायद 'रहता था' कहना बिल्कुल ठीक नहीं है, क्योंकि जैक ज़्यादातर घर से बाहर ही रहता था। वह एक फेरीवाला था। अपनी पीठ पर अपने माल—रिबन, लेस, दस्ताने, टोपियाँ, बटुए, बेल्ट, छुरियाँ, सुइयाँ और पिन आदि

का गट्ठर लादे वह उन्हें बेचने के लिए दूर-दूर के गाँवों और घरों के चक्कर काटता रहता था। लकड़ी को तराश कर छोटी-मोटी चीज़ें वह खुद भी बनाता था—जैसे सीटियाँ, खूँटियाँ, बच्चों के छोटे-छोटे खिलौने, आदि।

जैक हफ़्तों बाहर रहता। लेकिन जब वह वापस लौटता तो बिक्री से मिले पैसों में से कुछ अपनी माँ को देता। फिर भी वह शिकायत करती कि वह घर में कम ही रहता है। वह उससे कहती कि उनके मकान की छत की मरम्मत करनी थी, और बगीचे में खुदाई भी करनी थी। बगीचे में बस बंदगोभियाँ उगती थीं—और था एक बहुत बड़ा शाहबलूत का पेड़।

एक रात, जब जैक घर में ही था, उसने विचित्र सपना देखा। उसने देखा कि वह और उसका कुत्ता मॉल एक चौड़ी नदी पर बने एक पुल पर खड़े हैं। उसने वह पुल और नदी पहले कभी नहीं देखी थी। पुल की सब से अजीब बात तो यह थी कि उस पर घर बने थे और दुकानें भी। और, एक गिरजाघर भी था। 'लेकिन यह तो सिर्फ़ एक सपना है,' जैक ने सपने में ही अपने-आप से कहा। फिर उसने एक

आवाज़ सुनी—वह सचमुच आवाज़ थी या उसे ऐसा लगा था? वह आवाज़ उसे बता रही थी कि वह लन्दन ब्रिज है। यदि वह वहाँ जाये और तीन दिन इंतज़ार करे तो वह कोई शुभ समाचार सुनेगा जिससे उसे बहुत फ़ायदा होगा।

जब आँख खुली तो जैक बोला, "बकवास!" पर पता नहीं क्यों, वह सपना उसको याद रहा। उस दिन उसने बगीचे में खुदाई की, घास-पतवार निकाले, और सेम के बीज बोये।

अगली रात को उसे नींद आयी ही थी कि उसने ठीक वही सपना फिर देखा—वह लन्दन ब्रिज पर जाये और शुभ समाचार का इंतज़ार करे। यह दूसरी रात थी जब उसने वही सपना दोबारा देखा।

दूसरे दिन उसने मकान की छत की मरम्मत शुरू की, लेकिन वह काम धीरे-धीरे कर सका और उसे ख़त्म भी नहीं कर पाया। उसका दिमाग़ कहीं और था। वह इस बात को दिमाग़ से नहीं निकाल सका कि उसने वही सपना दो बार देखा। तीसरी रात को उसने फिर सपने में लन्दन ब्रिज को देखा और यह भी कि वहाँ उसे कोई शुभ समाचार मिलेगा।

इस बार उसकी आँखें खुलीं तो उसने फ़ैसला

कर लिया था। "बिना कोशिश किये कुछ भी हासिल नहीं होता," उसने अपने कुत्ते मॉल से कहा, "हम लन्दन जायेंगे—छत चाहे टपके या नहीं—हम अभी चलेंगे।"

उसने किसी को भी अपने इरादे के बारे में नहीं बताया। उसने हमेशा की तरह अपना फेरीवाला गट्ठर तैयार किया और पीठ पर लाद लिया। फिर उसने अपनी मोटी डंडी ली, अपने कुत्ते को आवाज़ दी और अपनी दुखी माँ से विदा ली—सब कुछ हर रोज़ की तरह।

फेरीवाला और उसका कुत्ता लन्दन की ओर चल पड़े।

रास्ते में जैक अपना माल बेचने के लिए कई जगह रुका—कहीं किसी लड़की की शादी के लिए नई टोपी बेची तो कहीं एक चाकू। पहले तो वह उन ग्राहकों को बेच रहा था जो उसके घर से बहुत दूर नहीं थे और उसे जानते थे। मोल-भाव करने के बाद वे इधर-उधर की बातें करने लगे। अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा कि वह लन्दन जा रहा है। उन लोगों को आश्चर्य भी हुआ और उसके प्रति सम्मान

भी। एक बूढ़े ने, जो अपनी जवानी में बत्तखों के झुंड को नॉरफ़ोक से लन्दन ले गया था, कहा कि सफ़र क़रीब सौ मील का होगा। सब ने दिल से जैक को शुभकामनाएँ दीं, और एक ने उनके रवाना होने से पहले उसके कुत्ते को एक हड्डी भी दी।

इस साहस-भरी यात्रा में जैक का कुत्ता मॉल उसका सबसे अच्छा साथी था। मीलों तक वह अपने स्वामी के पीछे-पीछे चलता रहता। जैक की हर बात, हर काम पर उसका ध्यान रहता। जैक रुकता तो वह भी रुक जाता। यदि जैक होठों पर अपनी उँगली रखता तो मॉल चुपचाप ज़मीन पर बैठ जाता, पर वह बहुत चौकन्ना रहता। जैक के 'चलो' कहते ही मॉल धनुष से निकले तीर की तरह उछलता और किसी खरगोश, या खरहे या

तीतर का पीछा करता जो उसके सामने पड़ जाता। वह जिसका पीछा करता उसे पकड़ लेता था। फिर जैक सूखी टहनियाँ इकट्ठी कर आग जलाता और रात को वह और उसका कुत्ता भुने गोश्त का मज़ा लेते। खाने के बाद, जैक और उसका कुत्ता खुले तारों के नीचे सो जाते।

पहले कुछ दिन तो मौसम अच्छा रहा। चिड़ियाँ चहचहातीं और जैक सीटी बजाता चलता। फिर पानी

बरसने लगा। कभी हल्की बौछार, कभी भारी बारिश। सड़कें जो कच्ची पगडंडियों से ज़्यादा नहीं थीं, दलदल बन जाती थीं। रास्ते में जैक को टूटी हुई गाड़ियाँ और वैगन मिले जो मिट्टी में धँसे पड़े थे। यहाँ तक कि घुड़सवारों को भी बड़ी सावधानी से रास्ता ढूँढ़ना पड़ रहा था। लेकिन जैक, अपनी दोनों मज़बूत टाँगों और मोटी डंडी की मदद से, कीचड़ से निकलता आगे बढ़ता गया। मॉल उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

रात को जैक भले खुले मैदान में सोता या किसी छत के नीचे, मॉल उसकी चौकसी करता। यदि जैक अपनी गठरी को कहीं कुछ मिनटों के लिए रखता तो वह मॉल से कहता, "होशियार!" और मॉल चौकस होकर उसके ऊपर खड़ा हो रखवाली करता। यदि कोई अजनबी पास फटकता तो वह अपने दाँत

निकाल कर गुर्राता। मॉल जो धमकी देता तो वह उसे पूरा भी कर सकता था।

वे आगे बढ़ते गये। रास्ते में उन्हें राही मिले। लोगों को यह जान कर आश्चर्य होता था कि वह नॉरफ़ोक में स्वाफ़हम जैसी दूर की जगह से लन्दन के लिए चला जा रहा है। उनकी समझ में नहीं आया कि वह क्यों ऐसा कर रहा है। लेकिन जैक ने होशियारी बरती—उसने अपने तीनों सपनों के बारे में लोगों को

कुछ नहीं बताया। और मॉल तो कुत्ता था, वह तो बड़बड़ करता नहीं। अंत में जैक ने निश्चय किया कि स्वाफ़हम और नॉरफ़ोक का नाम न लेना ही ठीक रहेगा। आगे वह अपने इस निश्चय पर क़ायम रहा।

आख़िरकार, बहुत दिनों तक अच्छे और ख़राब मौसम में चलते रहने के बाद वे लन्दन के निकट पहुँच गये। लोग जैक से कहने लगे कि टेम्स नदी की ओर बढ़ो जिसके किनारे लन्दन बसा है। उन्होंने नदी पर बने लन्दन ब्रिज का पता लगाने के लिए सही निर्देश दिये। उन्होंने बताया कि पुल का दृश्य कमाल का है जैसा उसने कभी सपने में भी न देखा होगा।

जैक मन-ही-मन मुस्कुराया, पर उसने सिर्फ़ कहा, "मैं पुल पर एक बार खड़ा होना चाहता हूँ।"

"ज़रूर।" उन्होंने इतने दया-भाव से कहा कि जैक समझ गया कि लोग उसको सीधा-सादा समझ रहे हैं।

अंत में जब जैक पुल पर पहुँचा तो उसे बिल्कुल वैसा ही पाया जैसा उसने अपने सपनों में देखा था। उसके किनारे-किनारे इमारतें थीं और नीचे नदी में, उसके मेहराबों के नीचे, तरह-तरह की नावें आ-जा रही थीं। पुल के बीचोंबीच पहुँच कर वह ठहर गया।

वह मॉल के साथ खड़ा हो गया और आँखें फाड़-फाड़ कर देखता रहा कि शायद कुछ घटे।

लेकिन कुछ भी नहीं हुआ।

पुल पर लोग जल्दी-जल्दी आ-जा रहे थे। उनके पास न तो उससे कुछ कहने का समय था, न उसकी ओर देखने का। कुछ देर बाद जैक ने महसूस किया कि इतने दिनों तक चलते-चलते वह बहुत ज़्यादा थक गया था। अब उसको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं थी। जहाँ उसको पहुँचना था, वह पहुँच गया था। उसे तो बस यहीं इंतज़ार करना था। उसने अपना गट्ठर उतारा, जो अब क़रीब-क़रीब ख़ाली हो गया था। उसे नीचे रखा और मॉल से कहा, "देखते रहना।" फिर वह ज़मीन पर खिसकता-खिसकता आगे बढ़ा जब तक कि एक कसाई की दुकान के आगे

पीठ टेक कर बैठने की जगह नहीं मिल गयी। वह वहीं बैठ गया और उसकी आँख लग गयी। कसाई के अलावा और किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। कसाई ने उसे देखा और सोचा, 'बेकार आदमी लगता है।'

दिन बीतने के पहले जैक को अपने और अपने कुत्ते के लिए सोने की जगह और खाने का इंतज़ाम करना था। उसने डबलरोटी और पनीर ख़रीदा और उसे जगह भी मिल गयी।

दूसरे दिन सवेरे जैक और मॉल जल्दी ही पुल पर पहुँच गये, ताकि उनसे कुछ भी छूट न जाये। जैक पहलेवाली जगह पर—कसाई की दुकान के आगे—खड़ा हो गया। वह सोच रहा था कि शायद कसाई मॉल को एक हड्डी दे दे। कसाई से आँखें मिलीं तो जैक मुस्कुराया। लेकिन जवाब में कसाई नहीं मुस्कुराया। सच पूछो तो उसे चिढ़ हो रही थी कि इतना आलसी बेकार आदमी उसकी दुकान के सामने मटरगश्ती कर रहा था। आज दूसरे दिन भी कुछ नहीं हुआ।

तीसरे दिन, पहले की तरह जैक और उसका कुत्ता फिर पुल पर जा पहुँचे। लेकिन आज जैक का किसी आदमी या किसी चीज़ को देखकर मुस्कुराने का मन नहीं हुआ। उदास-सा, वह सोच में पड़ा था। अगर उसको कोई शुभ समाचार मिलना था तो पहले दिन ही क्यों नहीं मिल गया? कम-से-कम दूसरे दिन तो मिल सकता था। और आज तो तीसरा और आख़िरी दिन था। न तो कोई संदेश मिला, न कोई संदेशवाहक आया।

इस बीच, फेरीवाले और उसके कुत्ते को देख कर, जो उसकी दुकान के सामने जम-से गये थे, कसाई का पारा चढ़ता जा रहा था। अब उससे और नहीं सहा जा रहा था। जैक से कुछ कहने के लिए उसने दुकान के बाहर सिर निकाला।

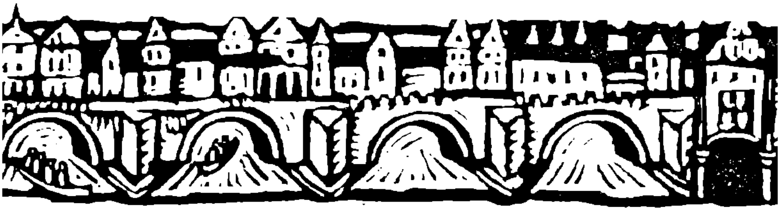

वह बोला, "मैं तुमको कई दिन से देख रहा हूँ।"

"ओह?" जैक ने धीरे से कहा और मॉल गुर्राया।

"तुम गट्ठर तो लादे हो, पर बेच कुछ नहीं रहे हो," कसाई ने कहा, "हो सकता है तुम भिखमँगे हो, लेकिन मैंने तुम्हें भीख माँगते भी नहीं देखा। आख़िर तुम हो क्या? चालबाज़ हो? चोर हो? रात को गला काटने वाले?"

विरोध करते हुए कहा, "मैं गाँव से किसी काम से आया हूँ। मुझसे यहाँ आने के लिए कहा गया था।"

"क्यों? क्या तुमसे किसी ने यह कहा कि लन्दन की सड़कें सोने की हैं?" कसाई ने व्यंग्य से कहा, "तुम सब देहाती लोग यही समझते हो।"

"नहीं, नहीं," जैक ने कहा, "मुझसे तो कहा गया था कि मैं लन्दन ब्रिज पर जा कर किसी समाचार का इंतज़ार करूँ जिससे मुझे फ़ायदा होगा। लेकिन," उसने दुख भरे स्वर में कहा, "संदेश देने कोई नहीं आया।"

"तुमको बताया गया ... तुमको बताया गया... तुमसे यह बात किसने कही?"

जैक ने हिचकिचाते हुए कहा, "वह सिर्फ़ एक सपना था।"

कसाई ज़ोर से हँस पड़ा। उसने कहा, "सपना? तुम सिर्फ़ सपने के कारण इतनी दूर आ गये?" आख़िर उसने हँसना बन्द किया, आँखें पोंछीं और जैक के आगे उँगली हिलाते हुए बोला, "नौजवान, अब मैं तुम्हें कुछ बताता हूँ। सिर्फ़ तुम अकेले को ही सपना नहीं आया। अभी उस दिन मुझे भी सपना आया था जो मुझे अब तक याद है—मैं एक टूटे-फूटे छोटे-से मकान के सामने खड़ा हूँ। यहाँ से काफ़ी दूर... मुझे

तो नाम भी याद है... स्वाफ़हम या कुछ ऐसा ही—नॉरफ़ोक में। एक बूढ़ी औरत उस मकान में रहती थी। उसका बगीचा था, जिसमें बस क़तार-की-क़तार बन्दगोभी थीं और एक बड़ा-सा शाहबलूत का पेड़ था। किसी ने वहाँ सेम बो दी थी, और उनमें से कुछ उगने भी लगी थीं... बीच में मत बोलो, नौजवान!"

यहाँ तक कसाई का सपना सुन कर जैक का मुँह खुल गया—बोलने के लिए नहीं, आश्चर्य से। वह

बोल कैसे सकता था? वह तो आश्चर्य से हक्का-बक्का रह गया था।

कसाई बोलता गया, "अपने सपने में मैंने एक आवाज़ सुनी। नहीं, आवाज़ नहीं थी। मुझको ऐसा लगा था कि यदि मैं उस शाहबलूत के पेड़ के नीचे खोदूँ तो मुझको ख़ज़ाना मिलेगा—सोने का ढेर।"

कसाई रुक गया, क्योंकि उसने देखा कि जैक मुँह फाड़े आश्चर्य से उसकी ओर घूर रहा है।

कसाई बोला, "तुम्हारे सामने जो खड़ा है वह लन्दन का रहनेवाला है, कोई गँवार नहीं जो यहाँ-वहाँ घूमता रहता है। मैं लन्दनवासी हूँ। हम जानते हैं कि कौन चीज़ क्या है। मैं इतना बेवकूफ़ नहीं कि सपनों को सच मान लूँ। बोलो, जवाब दो, क्या मैं बेवकूफ़ हूँ?"

जैक जो अपने सपनों में खोया हुआ था, अचानक चौंक पड़ा। बोला, "अरे! नहीं, नहीं, हर्गिज़ नहीं!"

"तो क्या इस बेवकूफ़ी भरे सपने के कारण लन्दन छोड़कर उस बेकार, छोटी-सी जगह ढूँढ़ने के लिए जाऊँ, जिसमें शाहबलूत का पेड़ है? बोलो, क्या मुझे ऐसा करना चाहिए?"

"मेरे ख़याल में तो नहीं," जैक ने कहा, "मैं पूरे दिल से आशा करता हूँ कि आप ऐसा नहीं करेंगे।"

"तो, नौजवान, मेरी सलाह मानो," कसाई ने कहा, "और मेरे अनुभव का लाभ उठाओ। उस शुभ समाचार के लिए जो कभी नहीं आयेगा, यहाँ इंतज़ार मत करो। जितनी जल्दी हो सके, घर चले जाओ, और समझदारी से काम लो।"

जैक ने कसाई को उसकी सलाह के लिए

धन्यवाद दिया और उसके कहे अनुसार चलने का वादा किया। वह और उसका कुत्ता तुरंत लन्दन छोड़ देंगे और अपने घर के लिए रवाना हो जायेंगे।

"और तुम्हारा घर है कहाँ?" कसाई ने पूछा। लेकिन जैक अचानक बहुत काम में लग गया था—पीठ पर अपना गट्ठर लादना और अपनी डंडी खोजना। उसने मॉल को बुलाया। वैसे तो मॉल सदा तैयार ही रहता था। जैक ने सिर्फ़ इतना कहा, "यहाँ से क़रीब सौ

मील दूर है। आओ मॉल, चलें। अच्छा, तो हम चलते हैं।"

कसाई ने कहा, "पर तुमने बताया नहीं कि तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

जैक ने कहा, "मैंने नहीं बताया, क्योंकि मैं वहाँ कम ही रहता हूँ। मैं सचमुच एक फेरीवाला हूँ। यहाँ-वहाँ घूमता रहता हूँ, अपने गट्ठर का सामान बेचता हूँ—रिबन, लेस, दस्ताने, टोपियाँ, बटुए, बेल्ट, छुरियाँ, सुइयाँ, पिन... और मैं बेचता हूँ..."

"हाँ, हाँ," उसकी बात बीच में काटते हुए कसाई बोला, "मैं वह सब नहीं जानना चाहता।" जैक के रवाना होने की हड़बड़ी में वह अपना सवाल भूल गया। जल्दी-जल्दी जैक ने कसाई से विदा ली और उसे फिर धन्यवाद दिया।

कसाई ने उन्हें जाते हुए देखा। वह खुश था कि उस नौजवान ने उसकी सलाह के लिए उसका इतना एहसान माना था। उसे अनुभव था कि हर आदमी ऐसा नहीं होता। पल भर के लिए तो उसने यह भी सोचा कि दुकान जा कर कुत्ते के लिए एक हड्डी ले आये, पर फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। ऐसा नहीं लगना चाहिए कि नौजवान को उसकी बेवकूफ़ी के लिए ईनाम दिया जा रहा है। फिर हड्डियाँ तो बेची जा सकती हैं। और, तब तक फेरीवाला आगे निकल

चुका था। वह, अपने कुत्ते के साथ, तेज़ी से पुल पार कर रहा था।

इस समय जैक के मन में सिर्फ एक ही बात थी—जल्दी-से-जल्दी शाहबलूत के पेड़ के नीचे पहुँचने की।

पुल को पार कर वह लन्दन की सड़क पर आया तो उसने अपने सामने आकाश में उड़ते एक पक्षी को देखा—एक कौवा, और उसे अपनी ही आवाज़ सुनायी दी, 'यहाँ से क़रीब सौ मील दूर—जिस रास्ते कौवा उड़ता है।' काश, वह उड़ सकता!

उसने अपने दिमाग़ से सारी फ़िज़ूल की बातें निकाल दीं। और, मीलों का सफ़र तय करने के लिए जितना तेज़ हो सका चलता रहा। दिन में वह और उसका कुत्ता शायद ही आराम करते हों। सवेरे, दिन निकलने के पहले ही चल पड़ते और शाम होने तक, और कभी तो रात भर भी चलते रहते।

मौसम कभी अच्छा होता, कभी ख़राब। वे चलते गये, चलते गये। अंत में, एक दिन जब सूरज डूब रहा था, उन्हें जानी-पहचानी जगह दिखायी पड़ने लगी।

"देखो मॉल! वह रही टूटी मीनार, जिसे तुम और मैं खूब पहचानते हैं।" और अब उनके सामने थी स्वाफ़हम के गिरजाघर की मीनार। वह रहा बूढ़ी विधवा औरत का घर। जैक और मॉल दौड़ने लगे

और घर में घुसते ही जैक ने देखा की उसकी माँ चूल्हे से गरम सूप का बर्तन उतार रही थी।

अचानक जैक को सामने देख कर वह हैरान रह गयी। लेकिन उसके हाथ से सूप नहीं गिरा। जैक पर यात्रा का असर दिखायी दे रहा था। थकान और भूख से उसका चेहरा मुरझा गया था। मॉल का भी यही हाल था। जैक की आँखों में एक अजीब-सी चमक थी। वह अजीब उत्साह से लन्दन के पुल और कसाई के बारे में बोलता रहा। फिर अचानक चुप हो

गया। उसके मन में ख़याल आया कि जैसा कि कसाई ने कहा था—सपनों पर यक़ीन करना सचमुच मूर्खता हो—एक क्रूर मज़ाक!

इसलिए उसने अपनी माँ से गड़े हुए ख़ज़ाने की चर्चा नहीं की। न ही वह बड़े और पुराने शाहबलूत के पेड़ की ओर दौड़ा। वह अपने स्टूल पर बैठा रहा, सूप पिया, मॉल को खाना खिलाया और अपनी माँ की बातें सुनता रहा—टपकनेवाली छत और सेम के बारे में, जो बग़ीचे में उग रही थीं।

माँ सोने चली गयी और वह आग के सामने उसी स्टूल पर बैठा रहा। थका होने के बावजूद वह वहीं बैठा रहा जब तक कि माँ सो न गयी और खर्राटे न भरने लगी।

फिर वह घर के बाहर निकला। अपनी माँ के सामान में से एक फावड़ा निकाला। मॉल उसके पीछे-पीछे चला।

चाँद चमक रहा था।

जैक ने शाहबलूत के पेड़ के नीचे खोदना शुरू किया। यहाँ खोदा, वहाँ खोदा। कभी उसका फावड़ा किसी पत्थर से टकराता तो कभी पेड़ की किसी जड़ से। वह खोदता गया और उसका फावड़ा और ज्यादा

पत्थरों और पेड़ की जड़ों से टकराता रहा।

फिर जैक ने अचानक इतने धीरे से 'अहा!' कहा कि सिर्फ़ मॉल सुन सकता था। जैक का फावड़ा इस बार किसी ऐसी चीज़ से टकराया जो कि न तो पत्थर था और न पेड़ की जड़। ऐसा लगा कि शायद धातु की कोई चीज़ है। जैक खोदता गया जब तक कि वह हाथ गड्ढे में डाल कर उस चीज़ को टटोल नहीं सका।

"यहाँ कुछ है!" उसने मॉल से कहा और कुत्ता उसके और पास आकर कूँ-कूँ करने लगा। "यह धातु का गोल ढक्कन है या वैसा ही कुछ... यह पूरा गोल है... किसी बर्तन का ढक्कन है और बर्तन में कुछ भरा हुआ है!"

पहले तो मिट्टी निकली, फिर कचरा। फिर दबा

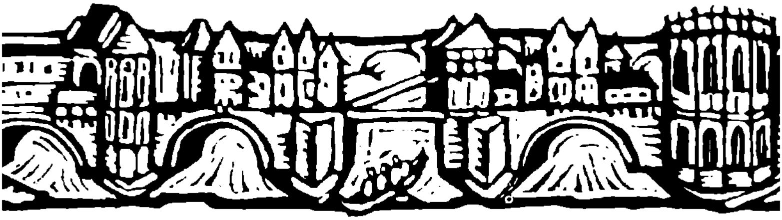

कर रखी हुई गोल-गोल चपटी चीज़ें। जैक ने उनमें से एक को निकाल कर चाँद की रोशनी में देखा। उसके ऊपर काला-काला-सा कुछ चिपका था। जैक ने उसको नाखूनों से खुरचा और अपने कोट पर रगड़ा। वाह! यह क्या चमका।

"ज़रूर, यह सोना ही है," जैक फुसफुसाया।

जैक ने और खुदाई की। अंत में ज़मीन के अन्दर से उसने पीतल का एक बड़ा-सा घड़ा निकाला। उसकी माँ के दाल पकानेवाले बर्तन से कहीं बड़ा। वह मुँह

तक सोने के सिक्कों से भरा था। वह बहुत समय से वहाँ छिपा पड़ा था। कौन जाने, किसने छिपाया था?

जैक का वह सपना सच निकला और वह अमीर हो गया। 'थैंक्सगिविंग' के त्यौहार पर उसने स्वाफ़हम के गिरजाघर की मीनार फिर से बनवायी और उसका उत्तरी गलियारा भी। उसने अपने घर की छत की मरम्मत नहीं करायी, बल्कि नया मकान ही बनवा लिया। ज़्यादा बड़ा और ज़्यादा अच्छा, वह भी उसी बगीचे के भीतर। शाहबलूत का पेड़ भी वहीं रहा। जैक ने शादी की और वे अच्छे-से घर में रहने लगे। उसके कई बच्चे हुए। वह अपने कुत्ते मॉल को नहीं भूला। वह जब तक ज़िन्दा रहा उसे हर रोज़ एक रसीली हड्डी मिलती। जब वह मर गया तो उसे शाहबलूत के बड़े पेड़ के नीचे दफ़ना दिया गया।

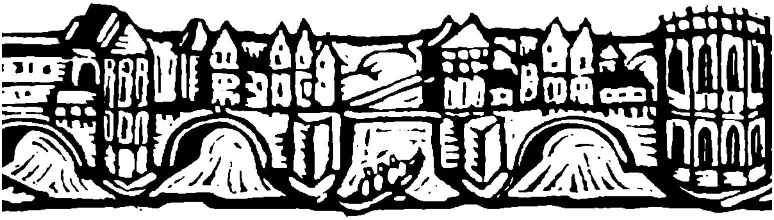

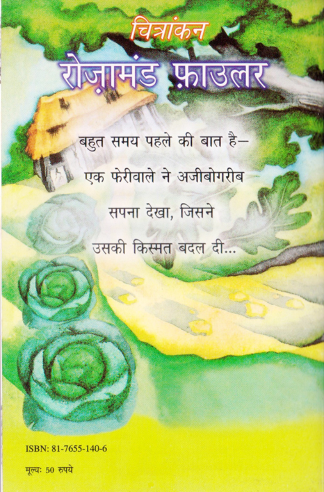

चित्रांकन
रोज़ामंड फ़ाउलर

बहुत समय पहले की बात है—
एक फेरीवाले ने अजीबोगरीब
सपना देखा, जिसने
उसकी किस्मत बदल दी...

ISBN: 81-7655-140-6

मूल्यः 50 रुपये